

प्राप्ति,

दाला रत्नाली,

मुचिय,

इत्याभासपह शासन।

वेदा जै,

निवेदिका,

दीक्षिका कलान् एवं प्रबन्धात्,

देवदान्, उल्लाखाभ्यः।

महिला उद्योग विधि एवं सं० कल्याण अनुभव

इत्याभासपहिनांक ३० नार्च, २००८

दिग्दयः मती पुर्व प्रशिक्षण केन्द्र के संचालन हेतु इच्छीहृत पर्यो के नियत वेदन तथा
क्रीक्षन की दद को पुनर्दीक्षित किये जाने के लिए है।

प्राप्ति,

प्रधानमंत्री नियमक, शासनादेश संख्या-२०७/XXVII(२)/२००७-२२६(कर्तव्या)/२००१
दिनांक २९ नवम्बर, २००७ के द्रव्यांक संख्या-२ पर निवाशुद्धार नियोधन किये जाने
को भी राज्यपाल नहोदय सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं :-

प्रक्रिया	पद कान्	पर्यो की संख्या	वर्तमान ज. कम विद्यत कालेष (प्रतिकाह ठ०)	पुनर्दीक्षित लिये ऊन दाला नियन कालेष (प्रतिकाह ठ०)
१. लकान्टर कालेष (स्वेहीदात)	०१	३०००		३०००

१. शासनादेश संख्या-२०७/XXVII(२)/२००७-२२६(कर्तव्या)/२००१ दिनांक २९ नवम्बर,
२००७ ने वर्णित अन्य शर्तें एवं प्रतिवल्ल दथावत् लाभ रहेंगे।

२. यह आदेश विह विभाग के अशासकीय पर्य संख्या- १०३६(P)/XXVII(३) /२००१,
दिनांक ११ नार्च, २००८ द्वारा प्राप्त उनकी सहकानि के द्रव्य को जारी किये जा रहे हैं।

अपर्याय,

(ज्ञान रत्नाली)

मुचिय।

प्रांतीकरण संचय:- /NVTI(2)/2006-226(कल्पाण/2007) तद्विनायक:-

प्रतिलिपि:- निम्नलिखित को सूचलार्थ प्रथम आवश्यक कार्यवाही जैन देखित।

१. अनुरुद्ध लालिय, का०१ मुख्यलंबी, उत्तराञ्चल शासन।
२. निर्वी दग्धिव, हुरुय सदिग, इत्यरुक्त शासन।
३. नाहालोखालारु उत्तरास्थापन, देहरादून।
४. गिलाधिकारी, देहरादून/कलनोड।
५. बरिष्ठ कोपाधिकारी/कोषाधिकारी, देहरादून, उत्तरास्थापन।
६. निला कौविक बालादाण झोधिकारी, देहरादून/कलनोड।
७. विना अंतुखाण-३, उत्तराञ्चल शासन।
८. आदेश प्रतिक्रिया

आज्ञा से,

(शया द्वृष्टि)

सदिग।